सामाजिक विज्ञान

(इतिहास)

अध्याय-2: व्यापार से साम्राज्य तक

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

मुग़ल बादशाहों में औरंगज़ेब आखिरी शक्तिशाली बादशाह थे। उन्होंने वर्तमान भारत के नए बहुत बड़े हिस्से पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था। 1707 में उनकी मृत्यु के बाद बहुत सारे मुग़ल सूबेदार और बड़े-बड़े जमींदार अपनी दिखाने लगे थे। उन्होंने अपनी क्षेत्रीय रियासतें कायम कर ली थी।

कंपनी का आगमन

अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध तक राजनीतिक क्षितिज पर अंग्रेजो के रूप में एक नयी ताकत उभरने लगी थी।

अंग्रेज पहले-पहल एक छोटी-सी व्यापारिक कंपनी के रूप में भारत आए थे। बाद में विशाल साम्राज्य के स्वामी बन बैठे। कैप्टन हडसन द्वारा बहादुर ज़फ़र और उनके बेटो की गिरफ्तारी हुई। 1857 में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध भारी विद्रोह शुरू हो गया तो विद्रोहियों ने मुग़ल बादशाह बहादुर शाह जफ़र को ही अपना नेता मान लिया था।

यूरोपीय कंपनियों का आगमन

1453 ई. में कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो गया, जिससे यूरोप व एशिया के मध्य के पुराने व्यापारिक मार्ग तुर्कों के नियंत्रण में आ गए। यूरोप के अधिकांश देश भारत तथा दक्षिणी पूर्वी एशियाई देशों के साथ मुख्यतः गरम मसालों का व्यापार करना चाहते थे अतः यूरोपीय देशों द्वारा नवीन व्यापारिक मार्गों की खोज को प्रोत्साहन दिया गया। नवीन देशों एवं व्यापारिक मार्गों की खोज में पुर्तगाल और स्पेन अग्रणी थे।

- पुर्तगाल के नाविक बार्थोलोमोडियाज ने 1487 ई. में उत्तमाशा अन्तरीप खोज निकाला।
- स्पेन निवासी क्रिस्टोफर कोलम्बस ने 1494 ई. में भारत पहुंचने का मार्ग ढूंढ़ते हुए अमेरिका को खोज निकाला।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

वाणिज्यिक

एक ऐसा व्यावसायिक उद्यम जिसमें चीजों को सस्ती कीमत पर खरीद कर और ज्यादा कीमत पर बेचकर यानी मुख्य रूप से व्यापार के जरिए मुनाफ़ा कमाया जाता है।

व्यावसायिक परिभाषा का उपयोग व्यवसाय और वाणिज्य से संबंधित सभी गतिविधियों को परिभाषित करने के लिए किया जाता है। इस शब्द का प्रयोग निवेश उद्योग में भी किया जाता है। यह आमतौर पर उन व्यापारिक कंपनियों के लिए उपयोग किया जाता है जो वायदा और विकल्प में शामिल होती हैंमंडी. वाणिज्यिक कंपनी वायदा बाजार की सक्रिय सदस्य होगी। उत्पादन से लेकर वितरण तक, वे वायदा अनुबंधों की बिक्री और विपणन से संबंधित सभी प्रकार की गतिविधियों में भाग लेंगे।

पूर्व में ईस्ट कंपनी का आगमन

सन 1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम से चार्टर अर्थात इजाजतनामा हासिल कर लिया जिससे कंपनी को पूरब से व्यापार करने का एकाधिकार मिल गया।

इस इज्जतनामे का मतलब यह था कि इंग्लैंड को कोई और व्यापारिक कंपनी इस इलाके में ईस्ट इंडिया कंपनी से होड़ नही कर सकती थी। उस ज़माने में वाणिज्यिक कंपनी मोटे तौर पर प्रतिस्पर्धा

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

से बचकर ही मुनाफ कमा सकती थीं। अगर कोई प्रतिस्पर्धा न हो तभी वे सस्ती चीजें खरीदकर उन्हें ज्यादा कीमत पर बेच सकती थी।

भारत की खोज

पुर्तगाल के खोजी यात्री वास्को डी गामा ने ही 1498 में पहली बार भारत तक पहुँचने के इस समुद्री मार्ग का पता लगाया था। सत्रहवीं शताब्दी की शुरुआत तक डच भी हिंद महासागर में व्यापार की संभावनाएं तलाशने लगे थे। कुछ ही समय बाद फ्रांसीसी व्यापारी भी सामने आ गए।यूरोप के बाजारों में भारत के बने बारीक सूती कपड़े और रेशम की जबरदस्त माँग थी। इनके अलावा काली मिर्च, लौंग, इलायची, और दालचीनी की भी जबरदस्त माँग रहती थी।

यूरोपीय कंपनियों के बीच इस बढ़ती प्रतिस्पर्धा से भारतीय बाजारों में इन चीजों की कीमतें बढ़ने लगीं और उनसे मिलने वाला मुनाफा गिरने लगा। सत्रहवीं और अठारहवीं सदी सदी में एक कंपनी किसी दूसरे कंपनी के जहाज डुबो देती, रास्ते मे रुकावटें खड़ी कर देती और माल से लदे जहाजों को आगे बढ़ने से रोक देती।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

ईस्ट इंडिया कंपनी बंगाल में व्यापार शुरू करती है

पहली इंग्लिश फैक्टरी 1651 में हुगली नदी के किनारे शुरू हुई। कंपनी के व्यापारी यहीं से अपना काम चलाते थे। इन व्यापारियों को उस जमाने में " फैक्टर " कहा जाता था। इस फैक्टरी में वेयरहाउस था जहाँ निर्मात होने वाली चीजों को जमा किया जाता था।

तक कंपनी ने इस आबादी के चारों तरफ एक किला बनाना शुरू कर दिया था। दो साल बाद उसने मुग़ल अफसरों को रिश्वत तीन गाँवो की जमींदारी भी खरीद ली। इनमें से एक गाँव कालीकता था जो बाद में कलकत्ता बना। अब इसे कोलकाता कहा जाता है।
(फरमान :- एक शाही आदेश होता हैं) औरंगजेब के फरमान से केवल कंपनी को ही शुल्क मुक्त व्यापार का अधिकार मिला था।

व्यापार से युद्धों तक

अठारहवीं सदी की शुरुआत में कंपनी और बंगाल के नवाबों का टकराव काफी बढ़ गया था। ऐसे में बंगाल के नवाब अपनी ताकत दिखाने लगे थे। मुर्शिद कुली खान के बाद अली वर्दी खान और उसके बाद सिराजुद्दोला बंगाल के नवाब बने। ये सभी शक्तिशाली शासक थे। उन्होंने कंपनी को रियायतें देने से मना कर दिया। व्यापार का अधिकार देने के बदले कंपनी से नज़राने माँगे, किलेबन्दी को बढ़ाने से रोका, सिक्के ढालने का अधिकार नही दिया। ये टकराव दिनोदिन गंभीर होते गए। अंत: इन टकरावों की परिणति प्लासी के प्रसिद्ध युद्ध के रूप में हुई।

प्लासी का युद्ध

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

1756 मे अली वर्दी खान की मृत्यु के बाद सिराजुद्दोला बंगाल के नवाब बने। कंपनी को सिराजुद्दोला की ताकत से काफ़ी भय था। सिराजुद्दोला की जगह कंपनी एक ऐसा कठपुतली नवाब चाहती थी जो उसे व्यापारिक रियायते और अन्य सुविधाएँ आसानी से देने में आनाकानी न करें

कंपनी ने बंगाल के नवाब सिराजुद्दोला के प्रतिद्वंद्वीयों में से किसी को नवाब बना दिया जाए। जवाब में सिराजुद्दोला हुक्म दिया कि कंपनी उनके राज्य में के राजनीतिक मामलों में टाँग अड़ाना बंद कर दे, किलेबंदी रोके, और बाकायदा राजस्व चुकाए। दोनों के बीच मतभेद के कारण **1757 में रॉबर्ट क्लाइव और सिराजुद्दोला के बीच प्लासी का युद्ध हुआ।** जिसमें सिराजुद्दोला की हार का एक बड़ा कारण उसके सेनापतियों में से एक सेनापति मीर जाफ़र की कारगुजारियाँ भी थी।

प्लासी की जंग इसलिए महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि भारत में यह कंपनी की पहली बड़ी जीत थी।

1764 बक्सर का युद्ध

बंगाल के नवाब मीर जाफ़र को बनाया गया जब मीर जाफ़र ने कंपनी का विरोध किया तो कंपनी ने उसे हटकर मीर कासिम को नवाब बना दिया। जब मीर कासिम परेशान करने लगा तो 1764 बक्सर का युद्ध में उसको भी हराना पड़ा। फिर मीर जाफ़र को नवाब बनाया लेकिन जब मीर जाफ़र की मृत्यु के बाद रॉबर्ट क्लाइव ने ऐलान किया कि अब " हम खुद ही नवाब बनना पड़ेगा।

आखिरकार 1765 में मुग़ल सम्राट ने कंपनी को ही बंगाल प्रांत के दीवान नियुक्त कर दिया, दीवानी मिलने के कारण कंपनी को बंगाल के विशाल राजस्व संसाधनों पर नियंत्रण मिल गया था।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

कपनी के अफ़सर ‘ नवाब ‘ बन बैठे :

कंपनी के पास अब सत्ता और ताकत थी।कंपनी का हर कर्मचारी नवाबों की तरह जीने के ख्वाब देखने लगा था। प्लासी के युद्ध के बाद कंपनी को निजी तोहफे के तौर पर जमीन और बहुत सारा पैसा मिला। खुद रॉबर्ट क्लाइव ने ही भारत से बेहिसाब दौलत जमा कर ली।

1743 में जब वह इंग्लैंड से मद्रास (अब चैन्नई) आया था तो उसकी उम्र 18 साल थी। 1767 में जब वह दो बार गवर्नर बनने के बाद हमेशा के लिए भारत से रवाना हुआ तो यहाँ उसकी दौलत 401,102 पौंड के बराबर थी। 1772 में ब्रिटिश संसद में उसे खुद भ्रष्टाचार के आरोपों पर अपनी सफ़ाई देनी पड़ी। सरकार को उसकी अकूत संपत्ति के स्रोत संदेहास्पद लग रहे थे। उसे भ्रष्टाचार आरोपों से बरी तो कर दिया गया लेकिन 1774 में उसने आत्महत्या कर ली।

कंपनी का फैलता शासन

बक्सर की लड़ाई (1764) के बाद कंपनी ने भारतीय रियासतों में रिजिडेंट तैनात कर दिये।ये कंपनी के राजनितिक या व्यावसायिक प्रतिनिधि होते थे। उनका काम कंपनी के हितों की रक्षा करना और उन्हें आगे बढ़ाना था।

” सहायक संधि ”

जो रियासत इस बंदोबस्त को मन लेती थी उसे अपनी स्वतंत्र सेनाएँ रखने का अधिकार नहीं रहता था। उसे कंपनी की तरफ से सुरक्षा मिलती थी और ‘‘ सहायक सेना ” के रखरखाव के लिए वः कंपनी को पैसा देती थी।

टीपू सुल्तान

शेर-ए-मैसूर हैदर अली (शासन काल 1782 से 1799) और उनके विख्यात पुत्र टीपू सुल्तान (शासन काल 1782 से 1799) जैसे शक्तिशाली शासकों के नेतृत्व में मैसूर काफ़ी ताकतवर हो चुका था। मालाबार तट पर होने वाला व्यापर मैसूर रियासत के नियंत्रण में था जहाँ से कंपनी काली मिर्च और इलायची खरीदती थी। 1785 में टीपू सुल्तान ने अपनी रियासत में पड़ने वाले बंदरगाहों से चंदन की लकड़ी, काली मिर्च और इलायची का निर्यात रोक दिया। टीपू सुल्तान ने भारत में रहने

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

वाले फ़्रांसिसी व्यापारियों से घनिष्ठ संबंध विकसित किए और उनकी मदद से अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया।

सुल्तान के इन कदमों से अंग्रेज़ आग-बबूला हो गए फलस्वरूप मैसूर के साथ अंग्रेज़ो की चार बार जंग हुई। (1767-69, 1780-84, 1790-92, और 1799) श्रीरंगपट्म की आखिरी जंग में कंपनी को सफलता मिली। अपनी राजधानी की रक्षा करते हुए टीपू सुल्तान मारे गए और मैसूर का राजकाज पुराने वोडियर राजवंश के हाथों में सौंप दिया गया।

मराठों से लड़ाई

1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई में हार के बाद दिल्ली से देश का शासन चलाने का मराठों का सपना चूर-चूर हो गया। उन्हें कई राज्यों में बाँट दिया गया। की राज्यों की बागडोर सिंधिया, होलकर, गायकवाड और भोंसले जैसे अलग-अलग राजवंशो के हाथो में थी। ये सारे सरदार एक पेशवा (सर्वोच्च मंत्री) के अंतर्गत एक कन्फ़ेडरेसी (रजमण्डल) के सदस्य थे। पेशवा इस राज्यमण्डल का सैनिक और प्रशासकीय प्रमुख होता था और पुणे में रहता था। महाद्जी सिंधिया और नाना फड़नीस अठारहवीं सदी के आखिर के दो प्रसिद्ध मराठा योद्धा और राजनीतिज्ञ थे।

पहला युद्ध 1782 में सालबाई संधि के साथ खत्म हुआ। दूसरा अंग्रेज-मराठा 1803-05 कई मोर्चो पर लड़ा गया। नतीजा यह हुआ की उड़ीसा, आगरा, दिल्ली कई भूभाग अंग्रेजों के कब्ज़े में आ गए। तीसरा यद्ध 1817-19 अंग्रेजों ने मराठों की ताकत को पूरी तरह से कुचल दिया।

क्षेत्रीय विस्तार की आक्रामक नीति

लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823 तक गवर्नर जनरल) के नेतृत्व में " सर्वोच्च " की एक नई नीति शुरू की गयी। कंपनी का दावा था की उसकी सत्ता सर्वोच्च है इसलिए वह भारतीय राज्यों से ऊपर है। 1838-42 के बीच अफगानिस्तान के साथ लंबी लड़ाई लड़ी और अप्रत्यक्ष कंपनी शासन स्थापित कर लिया। 1843 में सिंध भी कब्जे में आ गया। इसके बाद पंजाब की बारी थी। यहाँ महराजा रणजीत सिंह ने कंपनी की दाल नहीं गलने दी। 1839 में उनकी मृत्यु के बाद इस रियासत के साथ दो लंबी लड़ाइयाँ हुई और आखिरकार 1849 में अंग्रेजो ने पंजाब का भी अधिग्रहण कर लिया।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

विलय निति

लॉर्ड डलहौजी ने एक नई नीति अपनाई जिसे विलय की नीति का नाम दिया गया। यह सिद्धांत इस तर्क पर आधारित था की अगर किसी शासक की मृत्यु हो जाती है और उसका कोई पुरुष वारिस नहीं हैं तो उनकी रियासत हड़प कर ली जाएगी यानी कंपनी के भूभाग का हिस्सा बन जाएगी। इस सिंद्धात के आधार पे एक के बाद एक की रियासतें – सतारा (1848), संबलपुर (1850), उदयपुर (1852), नागपुर (1853), और झाँसी (1854) अंग्रेजों के हाथ में चली गयी।

नए शासन की स्थापना

ब्रिटिश इलाके मोटे तौर प्रशासकीय इकाइयों में बँटे हुए थे जिन्हें प्रेजीडेंसी कहा जाता था। उस समय तीन प्रेजीडेंसी थीं – बंगाल, मद्रास, और बम्बई।

न्याय व्यवस्था

1772 में एक नयी न्याय व्यवस्था स्थापित की गई। इस व्यवस्था में प्रावधान किया गया कि हर जिले में दो अदालतें होंगी – फ़ौजदारी अदालत और दीवानी अदालत।

1773 के रेग्युलेटिंग एक्ट के तहत एक नए सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की गई

कंपनी की फ़ौज

कंपनी के साथ भारत मे शासन और सुधार के ने विचार तो आए लेकिन उसकी असली सत्ता सैनिक ताकत थी। उन्नीसवीं सदी की शुरुआत में अंग्रेज एक समरूप सैनिक विकसित करने लगे थे। सिपाहियों को यूरोपीय ढंग का प्रशिक्षण, अभ्यास और अनुशासन सिखाया जाने लगा।

निष्कर्ष

ईस्ट इंडिया कंपनी एक व्यापारिक कंपनी से बढ़ते-बढ़ते एक भौगोलिक औपनिवेशिक शक्ति बन गई। 1857 तक भारतीय उपमहाद्वीप के 63 प्रतिशत भूभाग और 78 प्रतिशत आबादी पर कंपनी का सीधा शासन स्थापित हो चुका था।देश के शेष भूभाग और आबादी पर कंपनी का अप्रत्यक्ष प्रभाव था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

SHIVOM CLASSES
8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 24)

प्रश्न 1 निम्नलिखित के जोड़े बनाएँ:-

1. दीवानी	टीपू सुल्तान
2. शेर – ए – मैसूर	भूराजस्व वसूल करने का अधिकार
3. फ़ौजीदारी अदालत	सिपॉय
4. रानी चेन्नम्मा	भारत का पहला गवर्नर जनरल
5. सिपाही	फ़ौजदारी अदालत
6. वॉरन हेस्टिंग्स	कित्तूर में अंग्रेज -विरोधी आंदोलन का नेतृत्व किया

उत्तर –

1. दीवानी	भूराजस्व वसूल करने का अधिकार
2. शेर – ए – मैसूर	टीपू सुल्तान
3. फ़ौजीदारी अदालत	फ़ौजदारी अदालत
4. रानी चेन्नम्मा	कित्तूर में अंग्रेज -विरोधी आंदोलन का नेतृत्व किया
5. सिपाही	सिपॉय
6. वॉरन हेस्टिंग्स	भारत का पहला गवर्नर जनरल

प्रश्न 2 रिक्त स्थान भरें :-

(क) बंगाल पर अंग्रेजों की जीत ____ की जंग से शुरू हुई थी।

(ख) हैदर अली और टीपू सुल्तान ____ के शासक थे।

(ग) डलहौजी ने ____ का सिद्धांत लागू किया।

(घ) मराठा रियासतें मुख्य रूप से भारत के ____ भाग में स्थित थी।

उत्तर –

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(क) बंगाल पर अंग्रेजों की जीत प्लासी की जंग से शुरू हुई थी।

(ख) हैदर अली और टीपू सुल्तान मैसूर के शासक थे।

(ग) डलहौजी ने लैप्स तथा विलय का सिद्धांत लागू किया।

(घ) मराठा रियासतें मुख्य रूप से भारत के मध्य तथा पश्चिमी भाग में स्थित थी।

प्रश्न (पृष्ठ संख्या 25)

प्रश्न 3 सही या गलत बताएँ:-

1. मुगल साम्राज्य अठारहवीं सदी में मजबूत होता गया।
2. इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के साथ व्यापार करने वाली एकमात्र यूरोपीय कंपनी थी।
3. महाराजा रणजीत सिंह पंजाब के राजा थे।
4. अंग्रेजों ने अपने कब्जे वाले इलाकों में कोई शासकीय बदलाव नहीं किए।

उत्तर –

1. गलत
2. गलत
3. सही
4. गलत

प्रश्न 4 यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों भारत की तरफ क्यों आकर्षित हो रही थी ?

उत्तर – यूरोप के बाजारों में भारत के बने बारीक सूती कपड़े और रेशम की जबरदस्त माँग थी। इनके अलावा काली मिर्च, लौंग, इलायची और दालचीनी की भी जबरदस्त माँग रहती थी। यूरोपीय कंपनियों के बीच इस बढ़ती प्रतिस्पर्धा से भारतीय बाजारों में इन चीजों की कीमतें बढ़ने लगीं और उनसे मिलने वाला मुनाफा गिरने लगा। अब इन व्यापारिक कंपनियों के फलने–फूलने का यही एक रास्ता था कि वे अपनी प्रतिस्पर्धी कंपनियों को खत्म कर दे। इसी कारण यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों भारत की तरफ आकर्षित हो रही थी।

प्रश्न 5 बंगाल के नवाबों और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच किन बातों पर विवाद थे ?

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

उत्तर – बंगाल के नवाबों और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच निम्नलिखित बातों पर विवाद थे:-

औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद बंगाल के नवाब अपनी ताकत दिखाने लगे थे। उन्होंने कंपनी को रियायतें देने से मना कर दिया। व्यापार का अधिकार देने के बदले कंपनी से नज़राने माँगे, उसे सिक्के ढालने का अधिकार नहीं दिया और उसकी किलेबंदी को बढ़ाने से रोक दिया। कंपनी पर धोखाधड़ी का आरोप लगाते हुए उन्होंने दलील दी कि उसकी वजह से बंगाल सरकार की राजस्व वसूली कम होती जा रही है और नवाबों की ताकत कमज़ोर पड़ रही है। उसके अफसरों ने अपमानजनक चिट्ठियाँ लिखीं और नवाबों व उनके अधिकारियों को अपमानित करने का प्रयास किया। कंपनी का कहना था कि स्थानीय अधिकारियों की बेतुकी माँगों से कंपनी का व्यापार तबाह हो रहा है। व्यापार तभी फल – फूल सकता है जब सरकार शुल्क हटा ले।

प्रश्न 6 दीवानी मिलने से ईस्ट इंडिया कंपनी को किस तरह फायदा पहुंचा ?

उत्तर – दीवानी का अर्थ है:- राजस्व वसूली का अधिकार। 1765 में मुग़ल सम्राट ने कंपनी को ही बंगाल प्रांत का दीवान नियुक्त कर दिया। दीवानी मिलने के कारण कंपनी को बंगाल के विशाल राजस्व संसाधनों पर नियंत्रण मिल गया था। इस तरह कंपनी की एक पुरानी समस्या हल हो गयी थी। अठारहवीं सदी की शुरुआत से ही भारत के साथ उसका व्यापार बढ़ता जा रहा था। लेकिन उसे भारत में ज़्यादातर चीजें ब्रिटेन से लाए गए सोने और चाँदी के बदले में खरीदनी पड़ती थीं। इसकी वजह ये थी कि उस समय ब्रिटेन के पास भारत में बेचने के लिए कोई चीज़ नहीं थी। प्लासी की जंग के बाद ब्रिटेन से सोने की निकासी कम होने लगी और बंगाल की दीवानी मिलने के बाद तो ब्रिटेन से सोना लाने की ज़रूरत ही नहीं रही। अब भारत से होने वाली आमदनी के सहारे ही कंपनी अपने खर्चे चला सकती थी। इस कमाई से कंपनी भारत में सूती और रेशमी कपड़ा ख़रीद सकती थी। अपनी फौजों को सँभाल सकती थी और कलकत्ते में किलों और दफ्तरों के निर्माण की लागत उठा सकती थी।

प्रश्न 7 ईस्ट इंडिया कंपनी टीपू सुल्तान को खतरा क्यों मानती थी ?

उत्तर – ईस्ट इंडिया कंपनी टीपू सुल्तान को निम्नलिखित कारणों से खतरा मानती थी :-

(क) टीपू सुल्तान एक शक्तिशाली शासक था। उसके नेतृत्व में मैसूर राज्य काफ़ी शक्तिशाली हो चुका था।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(ख) मालाबार तट से होने वाला व्यापार मैसूर राज्य के नियंत्रण में था जहाँ से कंपनी काली मिर्च और इलायची ख़रीदती थी। 1785 में टीपू सुल्तान ने अपने राज्य में पड़ने वाले बंदरगाहों से चंदन की मे लकड़ी काली मिर्च और इलायची का निर्यात रोक दिया। उसने स्थानीय सौदागरों को भी कंपनी के साथ कारोबार करने से मना कर दिया।

(ग) टीपू सुल्तान ने भारत में रहने वाले फ्रांसीसी व्यापारियों से घनिष्ठ संबंध विकसित किए और उनकी सहायता से अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया। सुल्तान के इन कदमों से अंग्रेज (ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी) आग – बबूला हो गए। ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों में खलबली मच गई थी।

प्रश्न 8 "सब्सिडियरी एलायंस" (सहायक संधि) व्यवस्था की व्याख्या करें।

उत्तर – उस समय भारत में सहायक संधि लॉर्ड वैल्जली ने चलाई थी। संधि केवल अंग्रेज कंपनी और देशी राजाओं के बीच हुआ करती थी। संधि को मानने वाले देशी राजा को निम्नलिखित शर्तों का पालन करना पड़ता था:-

(क) अपने राज्य में अपने खर्च पर एक अंग्रेज़ी सेना रखना। इसे सहायक सेना कहा जाता था।

(ख) अपने दरबार में एक अंग्रेज प्रतिनिधि रखना।

(ग) अपने दरबार में अंग्रेजों की आज्ञा के बिना किसी विदेशी को नौकरी न देना।

(घ) किसी अन्य राज्य से युद्ध हो जाने एक अंग्रेजों का निर्णय मानना।

राजाओं की स्थिति :- सहायक संधि को मानने वाला देशी राजा यदि सहायक सेना का खर्चा नहीं दे पाता था। कंपनी जुर्माने के रूप में उसके किसी प्रदेश पर अधिकार कर लेती थी। उदाहरण के लिए उस समय अवध के नवाब को 1801 में अपना आधा इलाका कंपनी को सौंपने के लिए मजबूर किया गया क्योंकि नवाब " सहायक सेना" के लिए पैसा अदा करने में चूक गए थे। इसी आधार पर हैदराबाद के भी कई इलाके छीन लिए गए।

प्रश्न 9 कंपनी का शासन भारतीय राजाओं के शासन में किस तरह अलग था।

उत्तर –

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

(क) भारत में ज्यादा तर राजा निरंकुश हुआ करते थे। उन्हें किसी जनता द्वारा नहीं चुना जाता था। उनका पद पैतृक होता था। मतलब कि उनके पिता के बाद उन्हें राजा घोषित कर दिया जाता था। वही दूसरी तरफ कंपनी का शासन कंपनी के अधिकारियों द्वारा नियुक्त प्रशासक चलाते थे। उन्हें शासन चलाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता था।

(ख) भारतीय राजाओं कोई भी अपना कानून नहीं हुआ करता था। कोई भी फैसला राजाओं द्वारा ही लिया जाता था। मतलब कि राजा ही सबसे बड़ा न्यायाधीश होता था। राजाओं के कानून लिखित नहीं थे। वही दूसरी तरफ कंपनी के सभी कानून लिखें हुए थे। इन कानून की समस्या के लिए अदालत भी बनाई गई थी। इन सबके ऊपर सर्वोच्च न्यायालय भी होता था।

(ग) कंपनी तथा भारतीय राजाओं के सैनिकों में अंतर होता था। राजाओं की सेना थोड़ी कम प्रशिक्षित थी। लेकिन वही कंपनी के सैनिक काफी प्रशिक्षित थे। उनको हर मुश्किलों से लड़ना सिखाया गया था।

प्रश्न 10 कंपनी की सेना की संरचना में आए बदलावों का वर्णन करें।

उत्तर – ईस्ट इंडिया कंपनी आरंभ में एक व्यापारिक कंपनी ही थी।परंतु बंगाल की विजय के बाद यह एक प्रशासनिक कंपनी भी बन गई।इसी बीच कंपनी ने बंबई तथा मद्रास पर भी अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी।अपनी सत्ता की रक्षा तथा मजबूती के लिए कंपनी की सेना को नया रूप देना आवश्यक हो गया।

सैनिक संरचना में परिवर्तन :- सैनिक संगठन में समय के अनुसार आवश्यक परिवर्तन किए गए। अठारहवीं शताब्दी में अवध और बनारस जैसी रियासतों में किसानों को भर्ती करके उन्हें पेशेवर सैनिक प्रशिक्षण दिया जाने लगा।ईस्ट इंडिया कंपनी ने जब अपनी सेना के लिए भर्ती शुरू की तो उसने भी यही तरीका अपनाया।अंग्रेज़ अपनी सेना को सिपॉय आर्मी कहते थे।1820 के दशक से युद्ध तकनीक के बदलने से कंपनी की सेना में घुड़सवार टुकड़ियों का महत्त्व कम हो गया।इसका कारण यह था कि ब्रिटिश शासन वर्मा, अफ़गानिस्तान और मिस्र में भी लड़ रहा था जहाँ सिपाही मस्केट (तोड़ेदार बंदूक) और मैचलॉक से लैस होते थे।अतः कंपनी की पैदल टुकड़ी अधिक महत्त्वपूर्ण होती जा रही थी।इस प्रकार 19 वीं शताब्दी के आरंभ तक सिपाहियों को यूरोपीय ढंग का प्रशिक्षण, अभ्यास और अनुशासन सिखाया जाने लगा।अब उनका जीवन पहले से भी कहीं अधिक नियंत्रित था।

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)